পাঠ 9
পাঠ

বন্ধুর বাড়ীতে

সুবিকাশ : এম্প হচ্ছে আমার বাড়ি।

প্রতাপ : বাঃ! আপনার বাড়ি তো খুব সুন্দর! সামনে অনেক জায়গা রয়েছে।

সুবিকাশ : পেছনেও কিছুটা জায়গা আছে। ওখানে তরি-তরকারী লাগিয়েছি। আর কিছু ফলের গাছও রয়েছে। আসলে ঐটা পুরনো আমলের বাড়ি তাম্প এত জায়গা।

প্রতাপ : সামনের ফুলের বাগানটা দারুণ হয়েছে। এসব কি আপনি করেছেন?

সুবিকাশ : এদিকে গন্ধরাজ, চাঁপা আর জবা এম্প বড় গাছগুলো আগে থেকেম্প ছিলো। বাকী সব ফুলের গাছ আমিম্প লাগিয়েছি।

প্রতাপ : বাঃ, চন্দ্রমল্লিকা আর গাঁদা খুব

मित्र के घर पर

सुविकाश: यही मेरा घर है।

प्रताप : वाह! आपका घर तो बहुत सुंदर है! सामने बहुत जगह पड़ी है।

सुविकाश: पीछे भी थोड़ी जगह है। वहाँ साग सब्जी लगा रखी है। और कुछ फलों के पेड़ भी हैं। असल में यह पुराने समय का घर है। तभी इतनी जगह है।

प्रताप : सामने जो फूलों का बगीचा है वह बहुत सुंदर है। क्या ये सब आपने किया हैं?

सुविकाश: गंधराज, चंपा और गुड़हल, ये सब बड़े पेड़ तो पहले से ही थे। बाकी सब फूलों के पौधे मैंने ही लगाए हैं।

प्रताप : वाह! चमेली और गेंदा बहुत सुंदर हो गए हैं। डहलिया की तो

ভাল হয়েছে। ডালিয়ার তো তুলনাম্প নেম্প। আপনি কি নিজেম্প চারা করেছেন না নার্সারী থেকে এনেছেন?

তুলना
ही नहीं। आपने ये पौधे स्वयं उगाए हैं या नर्सरी से लाए हैं?

সুবিকাশ : আমার এক বন্ধুর কাছ থেকে এম্পসব ফুলগাছের চারা এনেছি। এবার আসুন পিছন দিকে। এম্পসব আম, কাঁঠাল ও পেয়ারা গাছগুলো আমি লাগাম্প নি। এগুলো আগে থেকেম্প ছিলো। আমি শুধু পেঁপে গাছা লাগিয়েছি।

सुविकाशः मैं अपने एक मित्र के पास से फूलों के पौधों की ये सब पौधे लाया हूँ। अब आइए पीछे की ओर। ये सब आम, कटहल और अमरूद के पेड़ मैंने नहीं लगाए हैं। ये सब पहले से ही थे। मैंने तो केवल पपीते का पेड़ ही लगाया है।

প্রতাপ : দেখছি আপনার বেশ বাগানের শখ আছে।

प्रताप : देख रहा हूँ आपको बगीचे का बहुत शौक है।

সুবিকাশ : আসুন, ভেতরে আসুন। চলুন, চা খাম্প।

सुविकाशः आइए, अंदर आइए। चलिए, चाय पीते हैं।

শব্দার্থ

শব্দ	অর্থ
পেছনে	পীছে
তরি তরকারী	সাগ-সব্জী
গাছ	পেড়

আসলে	असल में
আমলের	जमाने का, समय का
এতো	इतना
গন্ধরাজ	गंधराज
চাঁপা	चंपा
জবা	गुड़हल
চন্দ্রমল্লিকা	चमेली
গাঁদা	गेंदा
ডালিয়া	डहलिया
চারা	पौधा
আম	आम
কাঁঠাল	कटहल
পেঁপে	पपीता
শখ	शौक

अभ्यास

I. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए गए शब्दों से दो-दो नये वाक्य बनाइए :

1. বীনা এম্প কাপড়া কিনেছে। (এনেছে, চেয়েছে)
2. আমি দিল্লী দেখেছি। (বেড়িয়েছি, গিয়েছি)
3. রমা কাশ্মীরে গিয়েছে। (ঘুরেছে, বেড়িয়েছে)
4. রামবাবু বাংলা লিখেছেন। (শিখেছেন, পড়েছেন)
5. উনি বাজারে যান নি। (দোকানে, অফিসে)

II. কোষ্ঠক में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

1. আমি কাল _____। (আসছি, এসেছি)
2. আপনি কবে _____ ? (ফেরেন, ফিরেছেন)
3. কমলা আজ কোথায় _____ ? (গিয়েছে, যায়)
4. তিনি এখনম্প _____। (এসেছেন, আসেন)
5. আমরা গতকাল _____। (ফিরি, ফিরেছি)

III. उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए।

উদাহরণঃ

আমি যাম্প।

আমি গিয়েছি।

1. সে কি বাজারে যায়?
2. রমেন জিনিসপত্র কেনে।
3. আমরা কাগজ পড়ি।
4. উনি দিল্লী যান।
5. তুমি কি বাংলা পড়ো?

IV. नीचे दिए गए वाक्यों को निषेधात्मक बनाइए।

1. আমি এম্প সিনেমা দেখেছি।
2. তিনি বাজারে গিয়েছেন।
3. কানাম্পবাবু চিঠি দিয়েছেন।
4. রমেন গান গেয়েছে।
5. ও কাপড় কেচেছে।

V. उचित शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1. আমি কাল বাজারে _____ নি।

2. সে দোকানে এস্প কাপড়া ________________।
3. তারা গতকাল ____________________।
4. আমরা কখনো কলকাতায় ________________ নি।
5. তিনি গান ________________ নি।

पढ़िए और समझिए ।

মূল্য ও মূল্যবোধ   मूल्य और जीवन मूल्य का बोध

আজকাল সব জিনিসের দাম বেড়েছে। বেড়েছে বললে ভুল হয়, দাম অনবরত বেড়ে চলেছে। বাড়তে বাড়তে দাম হয়েছে আকাশ-ছোঁয়া। শুধু দাম বাড়ছে, তা নয়। সেস্প সঙ্গে বাজার থেকে জিনিসপত্র উধাও। আজ দুধ পাওয়া যাচ্ছে না তো কাল পাঁউরুটি পাওয়া যাচ্ছে না। সেস্প সঙ্গে বেড়েছে লোকের জিনিসপত্র জমাবার চেষ্টা। জিনিস ঠিকমতো পাওয়া যাচ্ছে না বলে সবাস্প অযথা জিনিস-পত্র জমাচ্ছে। এতে গরীব লোকেরা বেশী অসুবিধেয় পড়েছে। াকার অভাবে তারা দরকারী জিনিসপত্র কিনতে পারছে না। ব্যবসাদাররা কাউকে তোয়াক্কা করে না। কেননা নির্বাচনের সময় তারা সব রাজনৈতিক দলকেস্প চাঁদা দিয়েছে। তাস্প কেউ কিছু বলতে পারছে না। সরকারী কর্মচারীরাও চুপ। তাদের মহার্ঘ ভাতা বেড়েছে। সব জিনিসের দাম বেড়েছে। কিন্তু দাম কমেছে দুটি জিনিসের -- মানুষের জীবনের এবং মূল্য বোধের। প্রত্যেক দিন খবরের কাগজেস্প তা আমরা দেখতে পাচ্ছি।

শব্দার্থ

শব্দ	अर्थ
মূল্য	मूल्य
মূল্যবোধ	जीवन मूल्य का बोध
মূল্যবৃদ্ধি	मूल्य बढ़ना, महंगाई बढ़ना, महंगा होना
	दाम

দাম

অনবরত

বাড়ছে

উধাও

জমাবার চেষ্টা

অযথা

কাউকে

নির্বাচনের

চাঁদা

মহার্ঘ ভাতা

বোধ

পাচ্ছি

আকাশ ছোঁয়া

अनवरत, लगातार

बढ़ रहा है, बढ़ रहे हैं

गायब

इकट्ठा करने की कोशिश, संग्रहवृत्ति

फालतू, अनावश्यक

किसी को

चुनाव का

चंदा

महंगाई भत्ता

ज्ञान

पा रहा हूँ

-(मुहावरा : आसमान छूना = अति हो जाना, सीमा से ऊपर चले जाना)

अभ्यास

I. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. সাধারণত কোন কোন জিনিস পাওয়া যায় না?
2. কারা জিনিস-পত্র জমাচ্ছে?
3. জিনিস-পত্রের দাম বেড়েছে বলে কাদের সবচেয়ে অসুবিধে হচ্ছে?
4. কোন্ কোন্ জিনিসের দাম কমেছে?
5. ব্যবসাদারদের কেউ কিছু বলতে পারে না কেন?

II. बायी ओर दिए गए शब्दों के साथ दाहिनी ओर दिए गए शब्दों के सही अर्थ से मिलान कीजिए।

অনবরত	মিছিমিছি
উধাও	গ্রাহ্য
অযথা	সব সময়
তোয়াক্কা	নিরুদ্দেশ
আকাশ-ছোঁয়া	অত্যন্ত বেশী

III. हिंदी में अनुवाद कीजिए।

সম্প্রতি আমরা সবাম্প মিলে উঁটি বেড়াতে গেছি। সবাম্প মিলে বাসেম্প গিয়েছি। এখন টিকিটের দাম অনেক বেড়ে গেছে। পাহাড়ের পাকদণ্ডী ঘুরে ঘুরে বাস যখন যাচ্ছিল তখন অপূর্ব লেগেছে। আমাদের সাথে দুজন অধ্যাপকও ছিলেন। সুদীপ্তাদি ও শুভ্রা গান করেছে। ছেলেরা বন্দীপুর জঙ্গলের ছবি তুলেছে। আমি জানলা দিয়ে বাম্পরের প্রাকৃতিক দৃশ্য দেখেছি। আমরা সবাম্প আনন্দ উপভোগ করেছি। উঁটিতে বহুরকমের ফল, পাহাড়ী ফুল ও অনেক মনোহর জিনিস পাওয়া যাচ্ছিল কিন্তু সব কিছুর দামম্প আকাশ ছোঁয়া। প্রায় কিছুম্প আমরা কিনতে পারলাম না। তবে ভালো লাগার অনুভূতি কোনো মূল্য দিয়ে কেনা যায় না।

IV. बंगला में अनुवाद कीजिए।

हमारी आवश्यकताएँ दिन-ब-दिन बढ़ी हैं। इसीलिए महंगाई भी बढ़ी है। लेकिन महंगाई की तुलना में आय नहीं बढ़ी है। गरीबों की क्रयशक्ति घटी है। वे अपनी जीवनोपयोगी वस्तुएँ कैसे खरीदें? हमें अपनी व्यर्थ की आवश्यकताएँ घटाएँ। हमारा जीवन सादा हो। यही संदेश हमारे ऋषियों का भी है।

V. नीचे दिए गए शब्दों में कुछ ऐसे शब्द हैं जो पाठ में आए हैं। उन शब्दों को रेखांकित कीजिए।

আজকাল	জিনিস	উপনির্বাচন	গরীব	পাঁউরুটি
নির্বাচন	শব্দ	মহার্ঘভাতা	জমাবার	ধনী
চুপ	চাঁদা	নির্যাতন	কর্মচারী	সব্জী

VI. जीवन मूल्यों पर एक अनुच्छेद बंगला में लिखिए।

টিপ্পণিয়াঁ

I. ইস পাঠ মেঁ পূর্ণ বর্তমান কাল কে ক্রিয়ারূপোঁ কা প্রয়োগ দিখায়া গয়া হৈ। কিসী ধাতু কা পূর্ণ বর্তমান কালিক রূপ বনানে কে লিএ উস ক্রিয়া কী অসমাপিকা ক্রিয়া রূপ কে সাথ 'ছ' (ছ) লগাকর উসকে বাদ বর্তমান কালিক পুরুষ বাচক প্রত্যয় লগাএ জাতে হৈঁ। জৈসে :

আমি করেছি।	(করে + ছ + ম্প)	মৈঁনে কিয়া হৈ।
আপনি করেছেন।	(করে +ছ + এন)	আপ নে কিয়া হৈঁ।
তিনি করেছেন।	(করে + ছ + এন)	উন্হোঁনে কিয়া হৈঁ।
তুমি করেছো।	(করে +ছ + ও)	তুম নে কিয়া হৈ।
তুম্প করেছিস।	(করে + ছ + ম্পস)	তূ নে কিয়া হৈ।
সে করেছে।	(করে +ছ + এ)	উস নে কিয়া হৈ।

ইন বাক্যোঁ কে নিষেধাত্মক রূপ বনানে কে লিএ সাধারণ বর্তমান কাল কে রূপ কে পশ্চাত 'নি' (নি) প্রয়োগ হোতা হৈ। জৈসে :

আমি করি নি।	মৈঁনে নহীঁ কিয়া হৈ।
আপনি / তিনি করেন নি।	আপ নে নহীঁ কিয়া হৈ।
তুমি করোনি।	তুম নে নহীঁ কিয়া হৈ।
তুম্প করিস নি।	তূ নে নহীঁ কিয়া হৈ।
সে / ও / এ করে নি।	উসনে নহীঁ কিয়া হৈ।